पीएच.डी. - 01

विषम ज्वर प्रतिरोधात्मक एवं चिकित्सात्मक अध्ययन अचिन्त्यशक्ति रस के परिप्रेक्ष्य में

अध्येता : डा. राकेश कुमार

निर्देशक : प्रो. मदन गोपाल शर्मा

वर्ष : 1993

आधुनिक विज्ञान द्वारा जैसे जैसे विषम ज्वर में रासायनिक द्रव्यों का उपयोग वृद्धिगत हो रहा है, वैसे वैसे ही उत्पादक हेतु 'मच्छरों में' उन रासायनिक द्रव्यों के सात्मीकरण की स्थिति होती जा रही है। उक्त समस्या के समाधान हेतु प्रतिरोधात्मक एवं चिकित्सात्मक दृष्टि से अध्ययन करने हेतु इस विषय का चयन किया गया है।

शोध कार्य के लिए 100 आतुरों का चयन कर उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया गया –

वर्ग 'अ'– अचिन्त्यशक्ति रस (सिद्धभैषज्यमंजूषा 2/60) व गोदन्ती युक्त टेबलेट

वर्ग 'ब'– अचिन्त्यशक्ति रस व करंज युक्त कैप्सूल

औषधि मात्रा – 250 मि.ग्रा. (टैबलेट/कैप्सूल) दिन में 3 बार

अनुपान – दुग्ध, मिश्री व मुनक्का

औषधि प्रयोग अवधि – 5 दिन

कुल प्राप्त 100 आतुरों में अन्येद्युष्क प्रकार के 45 आतुर तथा तृतीयक ज्वर के 30 आतुर प्राप्त हुए। स्पर्श परीक्षान्तर्गत जीर्णावस्था के आतुरों में यकृत् वृद्धि एवम् प्लीहावृद्धि के क्रमशः दोनों वर्गों में 22 प्रतिशत एवम् 24 प्रतिशत आतुर प्राप्त हुए।

दोनों वर्गों में औषधि सामान्य रूप से लाभकारी रही। कुल 100 आतुरों में चिकित्सात्मक परिणामों में अचिन्त्यशक्ति रस से पूर्ण लाभ वर्ग 'अ' में 80 प्रतिशत तथा वर्ग 'ब' में 70 प्रतिशत आतुरों को हुआ । सामान्य लाभ वर्ग 'अ' में 12 प्रतिशत तथा वर्ग 'ब' में 14 प्रतिशत आतुरों को हुआ । अलाभ कि स्थिति वर्ग 'अ' में 8 प्रतिशत तथा वर्ग 'ब' में 16 प्रतिशत रही। अतः परिणामों का अवलोकन करने पर ज्ञान होता है कि औषधि विषम ज्वर पर उत्तम कार्य करती है ।

पीएच.डी. - 02

आयुर्वेदीय स्वस्थवृत्त का युगानुरूप विश्लेषण

अध्येता : डा. नारायण सिंह चूण्डावत

निर्देशक : प्रो. रमाकान्त शर्मा

सह–निर्देशक : वैद्य ओम् प्रकाश उपाध्याय

वर्ष : 1995

प्राचीन और अर्वाचीन आर्ष एवं संग्रह ग्रन्थों में उपलब्ध साहित्य को उपजीव्य बनाते हुए विकीर्ण आयुर्वेदीय स्वस्थवृत्त को समाहित कर सामाजिक परिप्रेक्ष्य में वैयक्तिक स्वस्थवृत्त के महत्व को साम्प्रतिक स्थित्यनुकूल विश्लेषित करने हेतु महानिबन्ध विषय चयनित किया गया है, जो वर्तमान युग की अभीप्सा है ।

शोध विषय मुख्यतः युग को आधार मानकर दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है। प्रथम श्रेणी में वैदिककाल, उपनिषद्काल, पौराणिककाल, संहिताकाल और संग्रहकाल में प्रतिपादित स्वस्थवृत्त का विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है । द्वितीय श्रेणी में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में उपलब्ध स्वस्थवृत्त विषय का समन्वयात्मक अध्ययन किया गया है ।

महानिबन्ध का प्रणयन पाँच अध्यायों में किया गया है । स्वस्थवृत्त की व्युत्पत्ति एवं निर्वचन वैदिक वाङ्मय से संग्रहकाल तक का युगानुरूप विवेचन किया गया है। वृहत्त्रयी में विकीर्ण स्वस्थवृत्त के विषयरूपी सुमनों का संचय करके निर्वचन किया गया है । आधुनिक चिकित्सा में उपलब्ध सामाजिक स्वस्थवृत्त विषय का समन्वयात्मक अध्ययन किया गया है । प्राच्य एवं प्रतीच्य स्वस्थवृत्त विषय के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर स्वस्थवृत्त विषय का सम्यक विवेचन तथा सामाजिक स्वस्थवृत्त की दृष्टि से व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य के सन्दर्भों को भी युगानुरूप विश्लेषित किया गया

है। व्यक्तिगत स्वास्थ्य एवं सामाजिक स्वास्थ्य कैसे उपलब्ध किए जा सकते हैं तथा स्वस्थ रहते हुए पुरुषार्थ चतुष्ट्य की प्राप्ति हेतु विषय निबन्धित किए गए हैं।

आयुर्वेद में वैयक्तिक स्वस्थवृत्त पर विशेष बल दिया गया है, क्योंकि यदि शरीर स्वस्थ है तो बाह्य एवं आभ्यन्तर कारण विकारोत्पति में असमर्थ होते हैं, अतः आयुर्वेद क्षेत्र (पुरुष) को प्रमुखता देता है। यही कारण है कि आयुर्वेद में वैयक्तिक स्वस्थवृत्त में पुरुष के पूर्ण देह एवं मानस स्वास्थ्य पर बल दिया गया है । व्यक्ति समाज की ईकाई है, अतः आयुर्वेद में व्यक्ति को आधार मानकर स्वास्थ्य संरक्षण के प्रथम प्रयोजन का महत्व प्रतिपादित किया गया है । स्वस्थवृत्त में वृत्त जो व्यक्ति के द्वारा ही आचरित होता है । महाभारत में भी श्री विदुर जी ने वृत्त के महत्व को प्रतिपादित किया है ।

अतः यही निष्कर्ष निकलता है कि स्वस्थ रहने के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति को प्रशिक्षित करना पड़ेगा, क्योंकि व्यक्ति के स्वस्थ रहने से ही स्वस्थ समाज का निर्माण होगा और स्वस्थ समाज से ही स्वस्थ देश एवं स्वस्थ विश्व का निर्माण होगा। प्राचीन एवं अर्वाचीन वाङ्मय का अनुसंधान करने के पश्चात् अध्येता का यह मत है कि आयुर्वेदीय शास्त्रों से निर्देशित स्वस्थवृत्त विषय की अनुपालना ही सर्वोपरी है ।

पीएच.डी. - 03

मधुमेह रोग में तारकेश्वर रस एवं त्रिकटु गुटिका का बस्ति कर्म सहित चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. रामकिशोर जोशी

निर्देशक : प्रो. अजय कुमार शर्मा

वर्ष : 2002

इस महानिबन्ध के उद्देश्य हैं –

01, मधुमेह रोग के चयनित रोगियों में तारकेश्वर रस की कार्मुकता का अध्ययन करना।

02, मधुमेह रोग में त्रिकटु गुटिका के प्रभाव का अध्ययन करना ।

03, मधुमेह रोग में पंचतिक्त पंचप्रासृतिक बस्ति, तारकेश्वर रस एवं त्रिकटु गुटिका के चिकित्सीय प्रभाव का अध्ययन करना ।

प्रस्तुत शोध कार्य में रोगी चयन का आधार आयुर्वेद चिकित्सा ग्रन्थों में वर्णित मधुमेह तथा आधुनिक चिकित्सा ग्रन्थों में वर्णित Diabetes Mellitus रोग के लक्षणों तथा प्रयोगशालीय परीक्षण यथा – Blood sugar fasting/p.p. के आधार पर किया गया ।

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु मधुमेह के 50 रोगियों को पंजीकृत कर तीन वर्गों में विभाजित किया गया ।

वर्ग अ – इस वर्ग में 14 रोगियों को तारकेश्वर रस (भै.र. 34/35–39) 250 मि.ग्रा. कैप्सूल रूप में तथा उदुम्बर चूर्ण 3 ग्राम मात्रा में दिन में तीन बार जल अनुपान से एक माह तक सेवन कराया गया ।

वर्ग ब – इस वर्ग में 25 रोगियों को त्रिकटु गुटिका (भावप्रकाश म.ख. 38/73–75) 250 मि.ग्रा. मात्रा में दिन में तीन बार जल अनुपान से एक माह तक सेवन कराई गई।

वर्ग स – इस वर्ग में 11 रोगियों को पंचतिक्त पंचप्रासृतिक बस्ति (चरकसंहिता, सिद्धिस्थान, 8/8) को बस्ति निर्माणविधि से तैयार कर 15 दिन तक रोगियों को दी गई तथा अन्य औषधि – तारकेश्वर रस, उदुम्बर चूर्ण एवं त्रिकटु गुटिका का एक माह तक सेवन कराया गया । रोगियों को प्रति 15 दिन पश्चात् Blood sugar fasting/p.p. कराकर परिणाम प्राप्त किए।

प्रस्तुत शोध कार्य से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

वर्ग अ के रोगियों को 60 प्रतिशत लाभ मिला,

वर्ग ब के रोगियों में 55 प्रतिशत लाभ हुआ

तथा वर्ग स के रोगियों में 70 से 80 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

Ph.D. - 04

Standardization of crude drugs with special reference to their Pharmaceutical manufacturing

Scholar	:	Dr. K. Ramachandra Reddy
Guide	:	Prof. L.K. Dwivedi
Year	:	2002

The objectives of this study were –

(1). To collect different samples of Abhraka, Varatika and Kampillaka-from different regions.

(2). To evaluate the different physico – chemical properties of samples of different areas.

(3). To understand the genuinity of raw drugs.

Survey of Abhraka, Varatika and Kampillaka was undertaken. In the study 3 samples of Abhraka (Krisna) were collected from Gudur (S1), Rajasthan (S2) & Hyderabad (S3). Shodhana of these samples was done

with Godugdha (Nirvapa) for 7 Times . Dhanyabhraka was prepared from each sample .

3 samples of Varatika were collected from Jaipur (S1), Kanyakumari (S2) & Delhi (S3). All the samples were subjected to Shodhana (Swedana) in Nimbu swarasa for one prahara. Shodhit Varatika were incineratect using Gajaputa for 3 times in muffle furnace {Temp-700ºC}.

3 samples of Kampillaka were collected from Jaipur (S1), Hyderabad (S2) & Uttaranchal (S3). They were purified by washing with water and drying in shade. Bhavana was given with Nimbuswarasa and Ardraka swarasa for 3days each.

All the 3 materials were studied for pitrographic study, determination of foreign matter, total ash, water soluble extractives, loss on drying , limit test for Iron, partial analysis of $CaCo_3$, pH value and NPST. Among 3-3 samples of Abhraka, Varatika and Kampillaka, one sample of each were indentified as best, on the basis of grahya lakshana, pharmaceutical and physico-chemical study.

It was found that :-

1- In Abhraka sample no. 1 from Gudur (Nellore) was found to be the best.

2.- In Varatika sample no. 2 (Kanyakumari) was identified as best.

3.- In Kampillaka sample no. 3 (Uttaranchal) was identified as best.

Ph.D. - 05

Standardization of Druti w.s.r. to Gandhaka Druti

Scholar : Dr. K. Shankar Rao

Guide : Prof. L.K. Dwivedi

Year : 2003

The Objectives of this study were :

1 To bring scattered literature on Druti and its formulations under one umbrella.

2. To establish conceptual theme on Druti w. s. r. to Gandhaka Druti and its formulations.

3. To ensure that whether Gandhaka taila exhibit the characters of Druti or not. This is because, few Gandhaka taila formulation have the same pharmaceutical procedures as that of Druti . It also aims to find out that how Acidum Aromaticum Sulphuricum replaces Gandhaka Druti.

4. To standardize the methods, to ascertain difference between Drutis and to develop certain diagnostic parameters, as no standard parameters are available.

5. The other criteria of selection is based on its efficacy in the management of skin diseases such as Pama, Vicharchika etc.

To achieve the above objectives the following Druti formulations are selected for the present study.

1. Gandhaka Druti-I (Vangasena Samhita, Rasayana/40-42)
2. Gandhaka Druti-II (Rasendra Cudamani, 11/16-19)
3. Gandhaka Druti-III (Rasendra Cudamani, Modified method)
4. Gandhaka Druti-IV (Rasendra Cudamani, Modified method)
5. Gandhaka taila - V (Rasa. Rat. Sam. 3/43 Druti like process)
6. Gandhaka Druti-VI (Soxhalate Method - Ay. Kha.Vig. Pg. 349)

In the light of literary review the author opined that the preparations Satva, Taila, Vari, and Druti are one and same and consider them as Druti preparations. Further it states that the scientists of Rasashastra should think for considering the following formulations as Druti -

A. Presence of low melting point drugs in formulations : The formulations contain certain drugs which cause decrease in melting point of the preparations, such as Devadali, Bones of Frog, Indragopa etc.

   Ex. Abraka Druti, Loha Druti , Swarna Druti etc.

B. Preparations formed in the liquid state: Ex. Gandhaka vari, Gandhodhak, Gandhaka Druti etc.

C. Preparations formed into partial liquid state: Ex. All types of Gandhaka Drutis , Medicated oils and ghritas.

   The pharmaceutical study suggests that the breadth of the cloth should be 18''X18'' is suitable for the preparation. Application of fuse wire is better than thread observed. The ash, Sapo, Iodene etc. values were recorded.

The absorption spectrum showed two distinct maxima at 287nm and 264 nm. The lignan substances are responsible for stable liquid form of Druti.

As a part of clinical study - total 19 patients were grouped into A and B. Group A patients received Gandhaka Druti and group B patients received Gandhaka taila for 21 days with the follow up interval of every seven days in Pama.

The results of final study reveals better efficacy in Gandhaka taila over Gandhaka Druti.

पीएच.डी. - 06

नागार्जुनीय रसेन्द्रमंगल – समीक्षात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. वी. नागेश्वर राव

निर्देशक : डा. संतोष कुमार मिश्रा

वर्ष : 2003

नागार्जुनीय रसेन्द्रमंगल का समीक्षात्मक अध्ययन करना इस महानिबन्ध का उद्देश्य है।

इस अध्ययन के अन्तर्गत रसेन्द्रमंगल की विभिन्न टीकाओं व अन्य रसग्रंथों में वर्णित नागार्जुनीय रसेन्द्रमंगल के विशिष्ट बिन्दुओं का अध्ययन कर रसेन्द्रमंगल के महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन किया गया ।

इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्न प्रकार से हैं –

1. रसेन्द्रमंगल की रचना सिद्ध नागार्जुन ने की थी तथा इनका काल 8वीं सदी है ।
2. वर्तमान में उपलब्ध रसेन्द्रमंगल के 8 अध्यायों में से पूर्व के केवल चार अध्याय ही उपलब्ध हैं ।
3. रसेन्द्रमंगल में पारद और कुछ अन्य धातु एवं महारसों का शोधन, मारण द्रुति व सत्वपातन की विधियों का उल्लेख है ।
4. नागार्जुन ने किमियागिरी के लिए सुलभ पद्धतियों का भी उल्लेख किया है।
5. नागार्जुन रसशास्त्र के विशेषज्ञ के साथ–साथ चिकित्सक भी थे । इसीलिए बहुत सारे रसयोगों के साथ चिकित्सा के बारे में भी बताया है।
6. रसेन्द्रमंगल के साथ जुड़े होने के बाद भी कक्षपुट तंत्र एक अलग तंत्र है और रसेन्द्रमंगल एक स्वतंत्र ग्रंथ है ।
7. रसेन्द्रमंगल में रसशास्त्र के मौलिक विषयों का भी वर्णन किया गया है ।

पीएच.डी. - 07

जानुसंधिगत वात की चिकित्सा में संधिशूलहर योग एवं जानुसंधि आञ्छन चिकित्सा का प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. राजेश कुमार शर्मा

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

सह–निर्देशक : डा. एच.के. कुशवाह

वर्ष : 2003

इस महानिबन्ध का उद्देश्य जानुसंधिगत वात में संधिशूलहर योग एवं जानुसंधि आञ्छन का तुलनात्मक अध्ययन करना है ।

कार्य योजनान्तर्गत 30 आतुरों का चयन कर 3 वर्ग बनाए गए । प्रत्येक वर्ग में 10–10 आतुरों को रखा गया । वर्ग अ में संधिशूलहर योग (पारंपरिक, मुख्य घटक– लाक्षादि गुग्गुलु (भै.र. 49/14–15), गोदन्ती भस्म, मुलेठी चूर्ण व अश्वगंधा चूर्ण) की 5 वटी (500 मि.ग्रा. प्रति वटी) दिन में 3 बार सुखोष्ण जल से सेवन कराई गई। वर्ग ब में जानुसंधि आञ्छन का प्रयोग किया गया। वर्ग स में दोनों का प्रयोग किया गया। तीनों वर्गों के आतुरों में स्थानिक बाह्य प्रयोग हेतु धान्वन्तरम् तैल (सु.चि. 15/29–34 में वर्णित बला तैल के घटक द्रव्यों से निर्मित) का उपयोग प्रभावित जानुसंधि पर किया गया ।

प्रयोग अवधि 28 दिन रखी गई ।

परिणाम स्वरूप वर्ग अ में 71.89 प्रतिशत, वर्ग ब में 66.90 प्रतिशत व वर्ग स में 78.00 प्रतिशत औसत लाभ हुआ ।

पीएच.डी. - 08

श्रृंग, जलौका, अलाबु के द्वारा रक्तमोक्षण कर्म का शूल पर प्रभाव – एक चिकित्सकीय अध्ययन

अध्येता : डा. देवेश शुक्ला

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 2004

इस महानिबन्ध का उद्देश्य रक्तमोक्षण की विभिन्न विधियों का स्वतंत्र, परस्पर तुलनात्मक एवं शूल शामक औषध का स्वतंत्र एवं परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना है।

इस अध्ययन हेतु 135 आतुरों का चयन कर उन्हें 3 वर्गों में विभाजित किया गया।

वर्ग क में कफज विद्रधि पीड़ित 45 आतुर लिए गए,

वर्ग ख में वातज गृध्रसी पीड़ित 45 आतुर लिए गए,

वर्ग ग में पैतिक विसर्प पीड़ित 45 आतुर लिए गए ।

इन तीनों वर्गों के उपवर्ग बनाकर निम्न प्रकार अध्ययन किया गया –

वर्ग क के उपवर्ग अ में –

श्रृंगावचारण का प्रयोग किया गया ।

उपवर्ग ब में –

शुद्ध गुग्गुलु 2 ग्राम +गोदन्ती भस्म 500 मि.ग्रा. का दिन में 2 बार जल के साथ 7 दिन तक प्रयोग किया गया ।

उपवर्ग स में –

श्रृंगावचारण + शुद्ध गुग्गुलु + गोदन्ती भस्म का प्रयोग किया गया ।

वर्ग ख के उपवर्ग अ में –

जलौकावचारण का प्रयोग किया गया ।

उपवर्ग ब में –

शुद्ध गुग्गुलु +गोदन्ती भस्म का 7 दिन तक प्रयोग किया गया ।

उपवर्ग स में –

जलौकावचारण + शुद्ध गुग्गुलु + गोदन्ती भस्म का प्रयोग किया गया।

वर्ग ग के उपवर्ग अ में –

अलाबु अवचारण का प्रयोग किया गया ।

उपवर्ग ब में –

शुद्ध गुग्गुलु + गोदन्ती भस्म का 7 दिन तक प्रयोग किया गया ।

उपवर्ग स में –

अलाबु अवचारण + शुद्ध गुग्गुलु + गोदन्ती भस्म का प्रयोग किया गया।

सभी वर्गों में रक्त निर्हरण 50 मि.लि. – 100 मि.लि. मात्रा में, 7 दिन में 2–3 बार किया गया ।

प्रयोग अवधि 7 दिन रखी गई ।

वर्ग क, ख व ग का परिणाम निम्न प्रकार रहा –

वर्ग क के परिणाम –

उप वर्ग अ में – 52.3 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

उप वर्ग ब में – 11.9 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

उप वर्ग स में – 67.2 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

वर्ग ख के परिणाम –

उप वर्ग अ में – 77.5 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

उप वर्ग ब में – 50.0 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

उप वर्ग स में – 85.2 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

वर्ग ग के परिणाम –

उप वर्ग अ में – 80.0 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

उप वर्ग ब में – 11.7 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

उप वर्ग स में – 89.2 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ ।

पीएच.डी. - 09

मण्डल कुष्ठ रोग में महाखदिरादि घृत एवं रक्तमोक्षण की कार्मुकता का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. महेन्द्र कुमार श्रृंगी

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 2004

मण्डल कुष्ठ में महाखदिरादि घृत (च.चि. 7/152–156) एवं जलौकावचारण की कार्मुकता का अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु चिकित्सालय में 52 आतुरों का चयन किया गया एवं उन्हें 4 समूहों में विभाजित किया गया । प्रथम क वर्ग में 4 रोगी रखे गए एवं उन रोगियों पर केवल जलौकावचारण किया गया । द्वितीय ख वर्ग में 20 रोगी रखे गए एवं उन रोगियों को महाखदिरादि घृत वयस्कों में 20 ग्राम तथा बालकों में 10 ग्राम मात्रा में दुग्ध अनुपान से दिन में 2 बार प्रयोग करवाया गया। तृतीय ग वर्ग में 8 रोगी रखे गए एवं इस वर्ग के रोगियों को महाखदिरादि घृत एवं जलौकावचारण दोनों का ही प्रयोग करवाया गया । चतुर्थ घ वर्ग में 20 रोगी रखे गए एवं उनको औषधाभास का प्रयोग करवाया गया । रक्तमोक्षण में रक्त निकालने की मात्रा दंश स्थान पर खुजली व वेदना के आधार पर निर्धारित की गई।

प्रयोग काल अवधि 45 दिन रखी गई ।

प्राप्त परिणामों के आधार पर वर्ग क में लाभ 26.30 प्रतिशत, वर्ग ख में लाभ 46.85 प्रतिशत, वर्ग ग में लाभ 52.70 प्रतिशत एवं वर्ग घ में लाभ मात्र 13 प्रतिशत रहा।

पीएच.डी. - 10

व्रण में मधुसर्पि एवं सर्पिहरिद्रा की कार्मुकता का चिकित्सात्मक अध्ययन

अध्येता : डा. राजेश कुमार गुप्ता

निर्देशक : प्रो. एस.एस. शर्मा

वर्ष : 2005

इस महानिबन्ध का उद्देश्य व्रण में सर्पिहरिद्रा, मधुसर्पि एवं आसुत जल की कार्मुकता का अध्ययन करना है ।

यह अध्ययन दो वर्गों में किया गया –

अ. **प्रयोगात्मक अध्ययन (चूहों पर किया गया)** – इसमें 3 वर्ग बनाए गए एवं प्रत्येक वर्ग में 10 चूहे लिए गए –

वर्ग 'क' में चूहों के व्रण पर मधुसर्पि का लेप किया गया ।

वर्ग 'ख' में चूहों के व्रण पर सर्पिहरिद्रा का लेप किया गया ।

वर्ग 'ग' में चूहों के व्रण पर आसुत जल का प्रयोग किया गया ।

ब. **चिकित्सात्मक अध्ययन :–** इसमें 3 वर्ग बनाए गए एवं प्रत्येक वर्ग में 35 रोगी लिए गए।

वर्ग 'क' में रोगियों के व्रण पर मधुसर्पि का लेप किया गया ।

वर्ग 'ख' में रोगियों के व्रण पर सर्पिहरिद्रा का लेप किया गया ।

वर्ग 'ग' मे रोगियों के व्रण पर आसुत जल का प्रयोग किया गया ।

व्रणों का प्रक्षालन त्रिफला क्वाथ से किया गया ।

प्रयोग अवधि एक माह रखी गई ।

परिणाम के रूप में प्रयोगात्मक अध्ययन में व्रण संकुचन दर का औसत प्रतिशत निम्न प्रकार रहा –

	4थे दिन	8वें दिन	12वें दिन	16वें दिन
वर्ग क में –	24 प्रतिशत	50 प्रतिशत	70 प्रतिशत	80 प्रतिशत
वर्ग ख में –	23 प्रतिशत	40 प्रतिशत	60 प्रतिशत	75 प्रतिशत
वर्ग ग में –	23 प्रतिशत	25 प्रतिशत	30 प्रतिशत	35 प्रतिशत

चिकित्सात्मक अध्ययन के अन्तर्गत 'p' value निम्न प्रकार रही –

वर्ग क में – 0.001,

वर्ग ख में – 0.01,

वर्ग ग में – 0.05 रही ।

इस प्रकार वर्ग क के रोगियों को उत्तम लाभ प्राप्त हुआ ।